मङ्गलकामना

Q7UHR8

प्रभो! देश–रक्षा–बलं मे प्रयच्छ।
नमस्तेऽस्तु देवेश! बुद्धिं च यच्छ।।
सुतास्ते वयं शूर–वीराः भवाम।
गुरून् मातरं चापि तातं नमाम।।

घृणायास्तु नाशः सदैक्यस्य वासः।
भवेद् भारते स्नेहवृत्तेर्विकासः।।
प्रजातान्त्रिकं राज्यमस्माकमत्र।
सदा वर्धतां मङ्गलयत्र तत्र।।

न कोऽपि क्षुधा–पीडितो मानवः स्यात्।
न रुग्णो न नग्नो न क्षीणश्च तस्मात्।।
न शिक्षा–विहीनञ्च पश्याम कञ्चित्।
प्रभो! भारतस्योन्नतिःस्यात् कथञ्चित्।।

सुखैः पूर्णमेतद् भवेद् भारतं मे।
भवेदत्र नित्यं प्रभोऽनुग्रहस्ते।।
इयं कामना प्रार्थनैषा विधातः।
इमां पूरयैकाम् अये लोकमातः।।

शब्दार्थाः

मे = मेरा, मुझे। ते = तेरा, तेरे लिए। तातम् = पिता को। सुताः = पुत्र–पुत्रियाँ। स्नेहवृत्तेः = प्रेमभाव का। ऐक्यस्य = एकता का। वर्धताम् = बढ़े। प्रजातान्त्रिकम् = जनता का। इयम् = यह। कथञ्चित् = किसी तरह। लोकमातः = संसार की माता।

अर्थ

(1) हे प्रभो! मुझे देश की रक्षा करने का बल दो। हे देवेश! आपको नमस्कार है, आप मुझे बुद्धि प्रदान करें हम सभी आपके पुत्र–पुत्रियाँ, पराक्रमी बनें। गुरु, माता और पिता को नमस्कार करते हैं।

(2) घृणा का नाश हो, हमेशा एकता का वास हो। भारत में सदा प्रेमभाव का विकास हो। हमारा यह राज्य प्रजातान्त्रिक (जनता का) है। यहाँ सर्वत्र हमेशा मंगल (खुशहाली) बढ़ता रहे।

(3) यहाँ कोई भी व्यक्ति भूख से पीड़ित न हो। यहाँ कोई रोगी, वस्त्रविहीन और निर्धन न हो। और कोई यहाँ निरक्षर न होवें। हे प्रभु! किसी भी तरह भारत की उन्नति हो।

(4) मेरा भारत सुखों से परिपूर्ण होवे। हे प्रभु! आपकी कृपा यहाँ हमेशा होती रहे। हे विधाता! आपसे यही कामना है, यही प्रार्थना है। हे लोकमाता! हमारी इस कामना को पूर्ण करें।

अभ्यासप्रश्नाः

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) प्रथमे श्लोके कः प्रार्थ्यते ?
(ख) भारतं मे कीदृशं भवेत् ?
(ग) भारतस्य सुताः कीदृशाः भवेयुः ?
(घ) अस्माकं राज्यं कीदृशमस्ति ?
(ङ) नरः कया पीडितो न भवेत् ?

Q84SSV

(2) संस्कृत में अनुवाद कीजिए :–

(क) तेरे पुत्र सदा सुखी रहें।
(ख) भारत में कोई शिक्षा से रहित न हो।
(ग) मनुष्य को तुम भोजन दो।
(घ) हम गुरुओं को प्रणाम करें।
(ङ) सब सुखी हों।

(3) सन्धि विच्छेद कर प्रकार लिखिए–

सुतास्ते, घृणायास्तु, दीनश्च, नमस्तेऽस्तु, प्रार्थनैषा।

(4) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

(क) प्रभो! ––––––––––मे प्रयच्छ।
(ख) सुतास्ते –––––––– भवाम।
(ग) भारते स्नेहवृत्तेः ––––––––––।
(घ) सुखैः पूर्णमेतद् –––––––––– भारतं मे।
(ङ) इयं –––––––––– प्रार्थनैषा।